

# डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 4, अमेरिकी उपनिवेशों में संप्रदायवाद

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने व्याख्यान में बोल रहे हैं। यह सत्र 4 है, अमेरिकी उपनिवेशों में संप्रदायवाद।

यह रोड आइलैंड में धार्मिक विविधता के रोजर विलियम्स हैं। तो, हमने खुद को इस बात की याद दिला दी है कि रोजर विलियम्स कितने महत्वपूर्ण थे और रोड आइलैंड कितना महत्वपूर्ण था। फिर, हमने केकर्स, जॉर्ज फॉक्स और केकर्स के उदय के बारे में बात की, और फिर हम केकर्स को यहाँ अमेरिका ले आए। तो वे स्पष्ट रूप से एक बहुत ही महत्वपूर्ण समूह हैं और मुख्य रूप से रोड आइलैंड में बस रहे हैं, हालाँकि विशेष रूप से नहीं।

तो यह वह जगह है जहाँ हमने छोड़ा था। हम अभी तक बैपटिस्ट तक नहीं पहुँचे हैं। नमस्ते, क्रिस।

ओह, हम इसे टेप कर रहे हैं, इसलिए मुझे बस आगे बढ़ना चाहिए। तो, हम अभी तक बैपटिस्ट तक नहीं पहुँचे हैं, तो चलिए बैपटिस्ट पर चलते हैं, और फिर हम व्याख्यान तीन पर आगे बढ़ेंगे। तो रोड आइलैंड में बैपटिस्ट संप्रदाय, और फिर, जी, बैपटिस्ट का निरंतर इतिहास।

तो, अब रोड आइलैंड में मूल रूप से अंग्रेजी वेल्श बैपटिस्ट हैं। और मूल रूप से रोड आइलैंड में, दो प्रकार के बैपटिस्ट हैं, जाहिर है कि कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट और जॉन कैल्विन के बाद दाईं ओर। ये जॉन कैल्विन की तिथियाँ हैं।

हाँ। हम F पर हैं, रोड आइलैंड में बैपटिस्ट संप्रदाय, और फिर हम देखेंगे कि G बहुत जल्दी है, बस बैपटिस्टों का निरंतर इतिहास है। तो, रोड आइलैंड में दो तरह के बैपटिस्ट थे: कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट और बैपटिस्ट बैपटिस्ट।

और दाईं ओर जॉन कैल्विन की तस्वीर है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जो कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट से सहमत नहीं थे, और उन्होंने जैकब आर्मिनियस के नाम पर आर्मिनियन बैपटिस्ट का लेबल लगा लिया। और यहाँ बाईं ओर जैकब आर्मिनियस की तस्वीर है, और ये आर्मिनियस की तिथियाँ हैं।

अब, ऐसा बहुत कुछ नहीं है जो आर्मिनियस को कैल्विन से अलग करता हो। आर्मिनियस से, एक तरह से, कैल्विनवादी धर्मशास्त्र का बचाव करने के लिए कहा गया था, और कुछ चीजें थीं जिनका वह बचाव कर सकता था और कुछ ऐसी थीं जिनका वह बचाव नहीं कर सकता था। लेकिन हमारे उद्देश्यों के लिए, धर्मशास्त्र के संदर्भ में एक जगह जो बहुत से बैपटिस्टों को आकर्षक लगती थी, वह थी स्वतंत्र इच्छा का क्षेत्र।

और इसलिए वे आर्मिनियस को ईश्वर को हाँ या ना कहने की इच्छा की स्वतंत्रता के समर्थक के रूप में देखते हैं। बेशक, कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट पूर्वनियतिवादी लोग थे जो मानते थे कि कुछ लोगों को बचाया जाना पूर्वनियत था और अन्य लोगों को खो जाने के लिए पूर्वनियत या चुना गया था। इसलिए, आर्मिनियन बैपटिस्ट आए, और रोड आइलैंड में कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट और आर्मिनियन बैपटिस्ट के बीच विभाजन हो गया।

अब, आइए इस तरह के धार्मिक विवाद के बारे में बात करते हैं। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि रोजर विलियम्स किस पक्ष को लेने जा रहे हैं। याद रखें कि हमने कहा था कि रोजर विलियम्स एक बैपटिस्ट थे, लेकिन बहुत कम समय के लिए, और उन्होंने वास्तव में अमेरिका में पहला बैपटिस्ट चर्च बनाने में मदद की।

आप अंदाजा लगा सकते हैं कि वह किस पक्ष को लेने जा रहा है क्योंकि रोजर विलियम्स पूरी तरह से स्वतंत्रता के बारे में है, है न, अपने राजनीतिक जीवन और रोड आइलैंड में उसने जो कुछ भी स्थापित किया है, उसके संदर्भ में? पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता, यही वह है जिसके बारे में वह एक राजनीतिक नागरिक जीवन में सोचता है। खैर, आप जानते हैं कि जब वह बैपटिस्ट बनेगा तो वह एक आर्मिनियन बैपटिस्ट होगा, क्योंकि बैपटिस्ट इच्छा की स्वतंत्रता पर जोर देते हैं।

इसलिए कभी-कभी राजनीतिक स्वतंत्रता, नागरिक स्वतंत्रता और धार्मिक जीवन के संदर्भ में इच्छा की स्वतंत्रता में विश्वास एक साथ आता है, और रोजर विलियम्स ऐसा करेंगे। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वह इस स्वतंत्रता पर जोर देने के लिए आर्मिनियन बैपटिस्ट में शामिल हो गए। अब, आर्मिनियन बैपटिस्ट का एक और नाम है।

उन्होंने एक नाम अपनाया जिसे सिक्स- प्रिंसिपल बैपटिस्ट कहा जाता है। सिक्स- प्रिंसिपल बैपटिस्ट। और सिक्स- प्रिंसिपल बैपटिस्ट ने इब्रानियों 6, 1, और 2 को अपनाया। इसलिए, इब्रानियों अध्याय 6, आयत 1 और 2, उनकी तरह का संप्रदायिक सिद्धांत था।

और इब्रानियों 6, 1, और 2 में छह सिद्धांत हैं जिनका मैं यहाँ उल्लेख करूँगा। मैं वास्तव में ऐसे लोगों से मिला हूँ जो छह सिद्धांत बैपटिस्ट चर्च से जुड़े हैं क्योंकि, जैसा कि हम देखेंगे, आर्मिनियन बैपटिस्ट से इस नाम से एक संप्रदाय बना है, और आज बहुत सारे बैपटिस्ट संप्रदाय हैं। आप आश्चर्यचकित होंगे।

हम अमेरिका में कुछ बैपटिस्ट संप्रदायों को दिखाएंगे। और ऐसे बहुत से संप्रदाय हैं। आपमें से कुछ बैपटिस्ट हो सकते हैं, लेकिन पाठ्यक्रम के अंत में यह जानना दिलचस्प होगा कि आपका बैपटिस्ट संबद्धता क्या है।

बैपटिस्ट संप्रदाय बहुत हैं। यहाँ छह सिद्धांत दिए गए हैं। जहाँ तक उनका सवाल है, ये ईसाई धर्म के छह बुनियादी सिद्धांत हैं।

यह वास्तव में इब्रानियों से ईसाई धर्म की व्याख्या करता है। नंबर एक है पश्चाताप। सिद्धांत नंबर एक पश्चाताप है।

बहुत महत्वपूर्ण, ज़ाहिर है। सिद्धांत नंबर दो, बेशक, विश्वास है। सिद्धांत नंबर तीन, जिसके बारे में आपको आश्चर्य नहीं होगा, बेशक, बपतिस्मा है।

तीसरा सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है। सिद्धांत संख्या चार है हाथ रखना। और हाथ रखना एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पवित्र आत्मा के ग्रहण को दर्शाता है।

इसलिए, यह हाथ रखना भी है जो वह तरीका बन गया है जिसके द्वारा समन्वय किया जाता है। मण्डली किसी को पादरी मंत्रालय के लिए नियुक्त करने के लिए हाथ रखती है। तो, नंबर चार, हाथ रखना।

पाँचवाँ नंबर मृतकों का पुनरुत्थान है। और छठा नंबर, शाश्वत न्याय। तो, जहाँ तक उनका सवाल है, इस हिब्रू मार्ग को देखते हुए, वे देखते हैं कि ये ईसाई धर्म के छह सिद्धांत हैं।

और वे हमारे सिद्धांत होंगे, और इसलिए हम न केवल खुद को आर्मिनियन बैपटिस्ट कहेंगे, बल्कि हम खुद को छह सिद्धांत बैपटिस्ट कहेंगे। तो, क्या होता है, अब चलो नंबर जी पर चलते हैं, बैपटिस्टों का निरंतर इतिहास। और चलो बैपटिस्टों के निरंतर इतिहास के बारे में कुछ बातें कहते हैं।

17वीं सदी में बैपटिस्ट एक बहुत छोटा समूह था। 18वीं सदी तक वे तेज़ी से आगे नहीं बढ़ पाए। मैं 18वीं सदी में बैपटिस्ट समूहों के कुछ उदाहरण बताना चाहता हूँ।

पहला एक विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना उन्होंने की थी। उन्होंने 1764 में विश्वविद्यालय की स्थापना की थी, और इसे ब्राउन विश्वविद्यालय कहा जाता था। ब्राउन विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी, लेकिन वास्तव में इसकी स्थापना प्रोविडेंस में नहीं हुई थी।

इसकी स्थापना वॉरेन, रोड आइलैंड नामक शहर में हुई थी। मैं भूल गया। मुझे कार्ड देखने की ज़रूरत है ताकि पता चल सके कि आप में से कुछ लोग यहाँ रोड आइलैंड के निवासी हैं या नहीं। लेकिन इसकी स्थापना वॉरेन, रोड आइलैंड नामक शहर में हुई थी।

लगभग 10 साल बाद इसे प्रोविडेंस में स्थानांतरित कर दिया गया। और इसे ब्राउन यूनिवर्सिटी कहा गया। बहुत दिलचस्प है।

इसकी स्थापना बैपटिस्टों द्वारा बैपटिस्ट प्रचारकों को प्रशिक्षित करने के लिए की गई थी। इसकी स्थापना इसलिए भी की गई क्योंकि संस्थापकों का मानना था कि रोड आइलैंड में बैपटिस्ट उदार हो गए थे और वास्तव में अपने बाइबिल के रुख को बनाए नहीं रख रहे थे। क्या यह मूल रूप से ब्राउन की स्थापना कैल्विनिस्ट आंदोलन नहीं था? वे वास्तव में अच्छे कैल्विनिस्ट सिद्धांतों और अन्य बातों को बनाए नहीं रख रहे थे।

तो, ब्राउन यूनिवर्सिटी की स्थापना का उद्देश्य रोड आइलैंड के बैपटिस्टों को वापस उस स्थिति में लाना था जहाँ उन्हें बाइबल और धर्मशास्त्र के संदर्भ में होना चाहिए। तो यह बहुत दिलचस्प है। अब, आज ब्राउन यूनिवर्सिटी की बात करें, जो आइवी लीग स्कूलों में से एक है।

आप उस परिसर में बहुत से लोगों से पूछ सकते हैं कि आपकी स्थापना क्यों की गई। मुझे यकीन है कि उनमें से बहुतों को यह पता नहीं होगा कि इसकी स्थापना बैपटिस्टों द्वारा बैपटिस्टों के लिए और विशेष रूप से बैपटिस्ट प्रचारकों के लिए की गई थी। इसलिए ब्राउन उस निरंतर इतिहास का एक अच्छा उदाहरण है, जो उन बातों को बनाए रखने की कोशिश करता है जिनका हमने उल्लेख किया है। एक और बात जिसका हमें उल्लेख करना चाहिए वह यह है कि इस क्षेत्र में कुछ अन्य बैपटिस्ट संप्रदाय बहुत जल्दी स्थापित हुए थे।

मैं सिर्फ़ दो का ज़िक्र करने जा रहा हूँ, लेकिन जैसा कि मैंने आगे बताया, हम दूसरों का भी ज़िक्र करेंगे। एक समूह को पार्टिकुलर बैपटिस्ट कहा जाता था। यही वह लेबल है जो उनके साथ जुड़ गया।

विशेष बैपटिस्ट क्योंकि वे केवल विश्वासियों के बपतिस्मा में विश्वास करते थे, जिसका अर्थ था वयस्क बपतिस्मा, और उन्हें लगा कि कुछ बैपटिस्ट इस सिद्धांत में फिसल रहे थे। और इसलिए उन्होंने वयस्क बपतिस्मा, विश्वासियों के बपतिस्मा के सिद्धांत की पुष्टि की, जो निश्चित रूप से, वह चीज है जो सामान्य रूप से बैपटिस्ट आंदोलन को दर्शाती है। लेकिन उन्हें कई में से एक के रूप में विशेष बैपटिस्ट का लेबल मिला।

दूसरे समूह का मैं सिर्फ़ ज़िक्र करना चाहता हूँ, और मैं इस समूह का ज़िक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि हम कुछ सौ साल बाद एक ऐसे ही समूह से मिलते हैं, और वह है, शायद, आपने इस संप्रदाय के बारे में कभी नहीं सुना होगा, लेकिन यह सेवेंथ डे बैपटिस्ट है। सेवेंथ डे बैपटिस्ट। इनकी स्थापना 1666 में हुई थी क्योंकि उनका मानना था कि ईसाई नौ आज्ञाओं का पालन करते हैं लेकिन दसवीं आज्ञा का नहीं, सब्त के दिन को याद रखना और उसे पवित्र रखना।

और इसलिए वे शुक्रवार रात और शनिवार को पूजा करते थे, और आज भी करते हैं। सातवें दिन के बैपटिस्ट। बहुत दिलचस्प।

अब, मैं उनका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, हम एडवेंटिस्ट समूहों से परिचित हुए, और एडवेंटिस्ट समूहों में सबसे बड़ा समूह जिसे हम इस पाठ्यक्रम में बहुत बाद में देखने जा रहे हैं, लेकिन एडवेंटिस्ट समूहों में सबसे बड़ा समूह सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट होने जा रहा है। इसलिए, सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट साथ आने वाले हैं, और वे सब्बाथ दिवस को पवित्र रखने के लिए याद रखने के उसी सिद्धांत के साथ आने वाले हैं। लेकिन वैसे भी, बैपटिस्ट संप्रदायों के एक जोड़े।

हम बैपटिस्ट संप्रदायों पर नज़र रखना चाहेंगे क्योंकि वे आगे बढ़ते हैं और बढ़ते हैं और इसी तरह आगे बढ़ते हैं। लेकिन वे दो नाम हैं, विशेष बैपटिस्ट और सातवें दिन के बैपटिस्ट। तो, रोजर विलियम्स और रोड आइलैंड में धार्मिक विविधता।

तो, मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुकता हूँ। इस व्याख्यान के बारे में कुछ? हम मूल रूप से रोजर विलियम्स को देख रहे हैं, और फिर हमने क्लेकर्स को देखा, और फिर जल्दी से बैपटिस्ट को देखा। आइए देखें कि रोड आइलैंड में क्या हो रहा है।

यह वारेन नामक स्थान पर था, रोड आइलैंड। प्रोविडेंस के पास एक छोटा सा शहर। वहाँ अभी भी एक चर्च है, जो उस छोटे से शहर में ब्राउन यूनिवर्सिटी की स्थापना की याद दिलाता है।

फिर, यह प्रोविडेंस में चला गया, जो उस समय रोड आइलैंड में जीवन का केंद्र था। दरअसल, यह वह विश्वास था जिसने दो समूहों के बीच विभाजन का कारण बना। रोड आइलैंड में स्थापित पहला समूह कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट था।

हालाँकि, उस आंदोलन के कुछ लोग पूर्वनियति या चुनाव में विश्वास नहीं करते थे। इसलिए, वे बाहर चले गए और खुद को आर्मीनियन बैपटिस्ट कहने लगे, और फिर उनमें से कुछ ने खुद को छह प्रमुख बैपटिस्ट कहना शुरू कर दिया, लेकिन फिर भी वे स्वतंत्र इच्छा और इसी तरह की अन्य बातों में आर्मीनियन विश्वास के साथ थे। यह सब रोड आइलैंड में हो रहा है, जो पूरी तरह से धार्मिक स्वतंत्रता, पूरी तरह से धार्मिक स्वतंत्रता का स्थान है।

तो, मुझे खेद है कि प्यूरिटन बैपटिस्ट को पसंद नहीं करते थे। मुझे आप बैपटिस्ट के लिए खेद है, लेकिन वे केकर को भी पसंद नहीं करते थे। लेकिन आप रोड आइलैंड में उन पर अपना हाथ नहीं जमा सकते क्योंकि यह धार्मिक स्वतंत्रता का गढ़ है।

तो, प्यूरिटन आम तौर पर बैपटिस्ट से नाराज थे, जैसा कि वे केकर से थे। इन लोगों को छोड़ने से पहले यहाँ कुछ और है। ठीक है, चलो तीसरे व्याख्यान पर चलते हैं, जहाँ हमें इस सप्ताह होना चाहिए।

व्याख्यान तीन, अमेरिकी उपनिवेशों में संप्रदायवाद। और इसलिए, हम यहाँ दो बातें करने जा रहे हैं। हम विभिन्न स्थानों, जैसा कि आप देख सकते हैं, और विभिन्न नेताओं को देखेंगे, और पता लगाएँगे कि अमेरिकी औपनिवेशिक काल तक पहुँचने तक ये संप्रदाय किस तरह से अमेरिकी औपनिवेशिक काल में बस गए।

फिर, हम कुछ निष्कर्ष निकालने जा रहे हैं, और निष्कर्षों में, हम भौगोलिक दृष्टि से कुछ पीछे देखने जा रहे हैं। तो, सबसे पहले, हम अमेरिकी उपनिवेशों में संप्रदायवाद के बारे में देखने जा रहे हैं। ठीक है, हम यहाँ न्यू इंग्लैंड से शुरू करने जा रहे हैं, और आप वही जानेंगे जो आप पहले से ही जानते हैं: न्यू इंग्लैंड का संप्रदायिक स्वरूप क्या था।

संप्रदायों की संरचना मुख्य रूप से सामूहिक है। याद रखें, प्यूरिटन और पिलग्रिम एक साथ आए और उन्होंने कांग्रेसनलिज्म का गठन किया। न्यू इंग्लैंड में कांग्रेसनलिज्म प्रमुख धार्मिक परंपरा बन गई, और इसलिए आप जिस भी छोटे शहर में जाते हैं, आपको एक सफेद-छत वाला कांग्रेसनलिज्म चर्च दिखाई दे सकता है।

अब, उनमें से कुछ कांग्रेसनलिज्म यूनिटेरियन बन गए। अब, यह एक और कहानी है, लेकिन चर्च अभी भी वहाँ है, और वे यूनिटेरियन चर्च हो सकते हैं, कांग्रेसनलिज्म चर्च नहीं, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि न्यू इंग्लैंड में ऐसा ही था। अब, न्यू इंग्लैंड के अलावा अन्य समूहों ने अंततः पैर जमा लिया, और इसलिए हमने केकर और बैपटिस्ट का उल्लेख किया।

एक और समूह है जिसका हम जिक्र करना चाहते हैं, जो न्यू इंग्लैंड के लिए आया और कुछ समय के लिए रहने में सक्षम था, और वे एंग्लिकन थे। इसलिए एंग्लिकन चर्च न्यू इंग्लैंड में आता है, और निश्चित रूप से रोड आइलैंड में एंग्लिकन चर्च हैं, लेकिन अंततः बोस्टन में भी एंग्लिकन चर्च हैं। आप बोस्टन में उनमें से बहुत से लोगों से गुज़रते हैं।

हम कुछ ज़्यादा मशहूर लोगों के बारे में बात करेंगे। तो यह स्पष्ट रूप से न्यू इंग्लैंड है, और यहीं हम अध्ययन कर रहे हैं। चलिए नीचे चलते हैं।

आइए बी का जिक्र करें। बेशक, हम रोड आइलैंड का जिक्र करते हैं। हम जानते हैं कि रोड आइलैंड में, उस धार्मिक स्वतंत्रता के कारण, इसमें कोई भी और हर कोई शामिल था जो आना चाहता था, लेकिन यह मुख्य रूप से केकर, कांग्रेगेशनल और बैपटिस्ट था, और फिर अंततः एंग्लिकन भी रोड आइलैंड में बस गए। इसलिए, न्यू इंग्लैंड के लिए, यह मुख्य रूप से कांग्रेगेशनल है, लेकिन फिर बैपटिस्ट, केकर और एंग्लिकन।

ठीक है, अब हम न्यूयॉर्क पर आ रहे हैं क्योंकि हमने पिछले व्याख्यान में न्यू इंग्लैंड के बारे में काफी बात की है, इसलिए अब हमें न्यूयॉर्क के बारे में बात करने की ज़रूरत है। ठीक है, न्यूयॉर्क का पहला नाम, ज़ाहिर है, न्यू नीदरलैंड था। न्यूयॉर्क की स्थापना मूल रूप से एक डच उपनिवेश के रूप में की गई थी, और बेशक, यह मुख्य रूप से एक डच व्यापारिक उपनिवेश के रूप में स्थापित किया गया था।

तो, न्यूयॉर्क नामक एक जगह है। अब, जो हुआ, वह यह है कि, जो लोग हॉलैंड से इस डच व्यापारिक कॉलोनी में आए थे, वे एक संप्रदाय, एक चर्च समूह से थे, जिसे डच रिफॉर्म कहा जाता था। तो, वे स्पष्ट रूप से रिफॉर्म हैं।

वे मुख्य रूप से अपने धार्मिक अभिविन्यास में कैल्विनिस्ट हैं, लेकिन क्योंकि वे हॉलैंड से आते हैं, इसलिए उन्हें डच रिफॉर्म का लेबल मिला है। अब, डच रिफॉर्म लोगों का समन्वय के बारे में बहुत उच्च दृष्टिकोण है, मंत्री कौन होना चाहिए, इस बारे में उनका बहुत उच्च दृष्टिकोण है, और इसी तरह। इसलिए, जब वे मूल रूप से यहाँ बसने के लिए आए थे, तो ये डच रिफॉर्म लोग मूल रूप से व्यापारी के रूप में यहाँ आए थे। जब वे बसने के लिए आए, तो उनके पास कोई नियुक्त प्रचारक नहीं था।

उनके पास कोई नियुक्त पादरी नहीं है। आम लोग कुछ काम कर सकते हैं, जैसे बीमारों से मिलना। वे धर्मोपदेश पढ़ सकते हैं और इसी तरह के अन्य काम कर सकते हैं, लेकिन वे जो कर सकते हैं, उसके मामले में उनकी सीमाएँ हैं।

और इसलिए, डच रिफॉर्म चर्च, एक तरह से, एक तरह से, आम लोगों द्वारा चलाया जाता था जब तक कि पहला मंत्री नहीं आया। और क्या आपको नहीं पता, पहला मंत्री 16 जनवरी, 1628 को, कल, 24 जनवरी को एम्स्टर्डम से रवाना हुआ था। कल पहले डच रिफॉर्म नियुक्त मंत्री के रवाना होने की तारीख की सालगिरह थी।

और यहाँ आकर उन्होंने पहला डच रिफॉर्म चर्च पाया और उस चर्च में मंत्री बने। इसलिए, 24 जनवरी, 1638 को वे हॉलैंड से रवाना हुए। उन दिनों यह लगभग 10 सप्ताह की यात्रा थी।

वह अपनी पत्नी और परिवार के साथ यहाँ आते हैं, और डच रिफॉर्म चर्च अब इस जगह पर स्थापित है जिसे न्यू नीदरलैंड कहा जाता है। तो, वहाँ एक और संप्रदाय है, जिसे हमने नहीं देखा है। इसलिए, हमने अभी तक इन लोगों के बारे में बात नहीं की है।

तो यह यहाँ आता है। ठीक है, अब शायद सबसे प्रसिद्ध लोगों में से एक, न केवल अमेरिकी चर्च इतिहास या ईसाई इतिहास में बल्कि राजनीतिक इतिहास में भी, पीटर स्टुवेसेंट आ गए हैं। पीटर स्टुवेसेंट 1664 तक न्यू नीदरलैंड के गवर्नर थे।

इसलिए, वह 1647 में गवर्नर बन गया और 1664 तक गवर्नर रहा। अब, पीटर स्टुवेसेंट स्पष्ट रूप से डच रिफॉर्म था। और पीटर स्टुवेसेंट डच रिफॉर्म चर्च को न्यू नीदरलैंड का चर्च बनाना चाहता था।

यानी, अगर आप वोटिंग सदस्य बनने जा रहे थे, तो पुरुष, बेशक, महिलाओं के पास अभी तक वोट नहीं थे। इसलिए, अगर आप इस समुदाय के वोटिंग सदस्य बनने जा रहे थे, तो आपको डच रिफॉर्म होना चाहिए था। वह लोगों पर इसे थोपना चाहता था।

उन्हें इन असहमत समूहों के प्रति भी प्यूरिटन की तरह ही नापसंदगी थी क्योंकि न्यू नीदरलैंड में कुछ केकर थे। उन्हें वास्तव में केकर पसंद नहीं थे, और न्यू नीदरलैंड में इस छोटी सी केकर कॉलोनी के खिलाफ बहुत अधिक उत्पीड़न था। इसलिए, उन्होंने डच रिफॉर्म चर्च के माध्यम से चीजों पर बहुत कड़ी पकड़ बनाए रखी।

वर्ष 1664 न केवल अमेरिकी चर्च के इतिहास में बल्कि राजनीतिक रूप से भी एक महत्वपूर्ण तारीख है। 1664 में, अंग्रेजों ने इस समुदाय पर कब्जा कर लिया और उन्होंने इसका नाम बदलकर यॉर्क, इंग्लैंड रख दिया, जो इंग्लैंड के सबसे महान स्थानों में से एक है। इसलिए, उन्होंने इसका नाम न्यू नीदरलैंड से न्यूयॉर्क रख दिया।

अब, जब उन्होंने इसका नाम न्यूयॉर्क रखा, तो उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता के प्रति बढ़ती सहिष्णुता और समझ को भी शामिल किया जो अन्य उपनिवेशों में विकसित हो रही थी। इसलिए, 1664 में, इसने अन्य समूहों के लिए इस जगह में आने का द्वार खोल दिया जिसे न्यू नीदरलैंड कहा जाता था और जो डच रिफॉर्म द्वारा नियंत्रित था, खासकर एंग्लिकन के लिए क्योंकि यह अब एक एंग्लिकन समुदाय है। मेरा मतलब है, यह एक ब्रिटिश समुदाय है, और विशेष रूप से एंग्लिकन का यहाँ आने का काफी स्वागत था।

लेकिन न्यूयॉर्क नामक इस जगह पर कई अन्य समूह आने लगे। केकर्स को यहाँ काफी सहज महसूस हुआ। साथ ही, रोमन कैथोलिकों का एक बहुत छोटा समूह न्यूयॉर्क में आया।

तो, न्यूयॉर्क थोड़ी आज़ादी और थोड़ी सहनशीलता का स्थान बनने लगा है। तो, न्यूयॉर्क। अब, डी, विलियम पेन और पेनसिल्वेनिया की ओर चलते हैं।

विलियम पेन , और मैं सिर्फ विलियम पेन का जिक्र करना चाहता हूँ। और फिर, आपने दूसरे कोर्स में उनके बारे में सुना होगा, इसलिए मैं यह बहुत संक्षेप में करूँगा। ये विलियम पेन की तारीखें हैं, 1644 और 1718।

विलियम पेन, संक्षेप में, मैं विलियम पेन हूँ। वह ब्रिटिश था, और वह ब्रिटिश तरह का अभिजात वर्ग था। मेरा मतलब है, वह इंग्लैंड में एक बहुत ही कुलीन वर्ग, एक धनी वर्ग और एक ज़मींदार वर्ग के परिवार से आया था।

तो, वह जैसे, संपत्ति, शक्ति और प्रभाव और इसी तरह के अन्य क्षेत्रों से आया था। और एंग्लिकन चर्च, एंग्लिकन समुदाय का हिस्सा था। विलियम पेन एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति हैं क्योंकि वह उन लोगों में से एक हैं जिन्हें केकर्स से विश्वास प्राप्त हुआ था।

विलियम पेन केकर संदेश की सादगी, केकर जीवन की सादगी और बहुत ही सरल तरीके से मसीह का अनुसरण करने से प्रभावित होने लगे थे। विलियम पेन अंततः 1666 में केकर बन गए। बहुत महत्वपूर्ण बात है, और हमने केकर्स के बारे में पहले भी यही कहा है, इसलिए याद रखें, यह दिलचस्प है कि केकर्स सभी वर्गों के लोगों को आकर्षित करते थे।

तो, इस केकर धर्म में कुछ ऐसा था जो इस बहुत अमीर, विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति को आकर्षित करता था। लेकिन याद रखें, यह नौकर वर्ग के लोगों और मध्यम वर्ग के सभी लोगों को भी आकर्षित करता था। तो, केकरवाद वास्तव में सभी क्षेत्रों में फैला।

ठीक है, जो हुआ, वह बहुत दिलचस्प है, लेकिन 1681 में विलियम पेन को इंग्लैंड के राजा से एक चार्टर मिला। बेशक, वह इंग्लैंड के राजा को जानता होगा, इसलिए उसने इंग्लैंड के राजा से एक चार्टर प्राप्त किया होगा। और चार्टर एक भूमि चार्टर है।

अब इंग्लैंड देश के कुछ हिस्सों, इस भूमि के कुछ हिस्सों पर हावी हो रहा है, और इसलिए इंग्लैंड के राजा ने विलियम पेन को थोड़ी सी ज़मीन दी। आज, हम इसे पेंसिल्वेनिया या पेंसिल्वेनिया राज्य कहते हैं। यह मेरे लिए बहुत अच्छा सौदा है।

अगर आप किसी को ज़मीन देने जा रहे हैं, तो उसे पेनसिल्वेनिया राज्य के आकार की ज़मीन दें। और, ज़ाहिर है, इसका नाम विलियम पेन, पेन्स वुड्स, पेनसिल्वेनिया और पेन्स वुड्स के नाम पर रखा गया था। इसका नाम पेन और उनके परिवार के नाम पर रखा गया था।

अगले ही साल उन्होंने एक शहर बसाया, और शहर का नाम फिलाडेल्फिया रखा जाने वाला था। किस शहर का? फिलाडेल्फिया? भाईचारे के प्यार का शहर। हाँ, फिलाडेल्फिया।

तो, क्या यहाँ फिलाडेल्फिया में कुछ लोग हैं? मुझे कार्ड देखने की ज़रूरत है, कुछ हद तक फिलाडेल्फिया के नज़दीक। मुझे फिलाडेल्फिया पसंद है।

हम इस बारे में बस एक मिनट में बात करेंगे। तो उसे यह ज़मीन मिलती है, पेन्स वुड्स, और फिर उसे यह शहर मिलता है, भाईचारे के प्यार का शहर। यह बहुत केकर लगता है, है न? भाईचारे के प्यार का शहर, आइए हम सब एक दूसरे से प्यार करें, और इसी तरह, तो यह बहुत केकर लगता है।

और, ज़ाहिर है, वह इसे स्थापित करने के बाद क्या करने जा रहा है, तो अब हम पेंसिल्वेनिया की ओर बढ़ते हैं। वह इस जगह को धार्मिक स्वतंत्रता के स्थान के रूप में स्थापित करने जा रहा है। रोड आइलैंड अब एक मॉडल बन गया है।

अब वह कहता है, हाँ, मैं चाहता हूँ कि यह कॉलोनी धार्मिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता का स्थान बने, क्योंकि मैं एक केकर हूँ, और मैं एक केकर के रूप में जानता हूँ कि राज्य के उत्पीड़न के तहत रहना, परेशान होना कैसा होता है। मैं केकरों को कॉलोनीयों में फाँसी दिए जाने आदि का इतिहास जानता हूँ। खैर, हम पेंसिल्वेनिया में ऐसा नहीं करने जा रहे हैं, इसलिए पेंसिल्वेनिया की स्थापना के लिए धार्मिक सहिष्णुता बिल्कुल महत्वपूर्ण थी।

ठीक है, अब, तो वह दरवाजा खोलता है। ठीक है, उसे केकर्स और प्यूरिटन्स के खिलाफ बहुत नाराजगी है, लेकिन यह भूमि चार्टर चार्ल्स द्वितीय से आता है, इसलिए हम इस भूमि चार्टर के समय तक चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल और शासन में हैं। यहाँ थोड़ी अधिक सहिष्णुता है, धार्मिक समूहों के लिए थोड़ी अधिक छूट है, और इसी तरह।

उसे यह चार्ल्स द्वितीय से मिला है। यहाँ कुछ और है? ठीक है, दरवाज़े खुले हैं। दरवाज़े खोलो, पेनसिल्वेनिया, और यह बहुत दिलचस्प है।

सबसे पहले आने वाले लोगों में से एक समूह जर्मन आप्रवासी थे क्योंकि यूरोप अभी भी बहुत सारे धार्मिक युद्धों से जूझ रहा था, और इसलिए बहुत सारे जर्मन आप्रवासी पेंसिल्वेनिया में आने लगे, जो बहुत ही दिलचस्प है, सभी तरह के लोग। सबसे बड़ा समूह, बेशक, जर्मन लूथरन थे। उन्हें पेंसिल्वेनिया में एक असली घर मिल रहा है।

फिलाडेल्फिया, पेनसिल्वेनिया में आकर, मैं फिलाडेल्फिया क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति को अपनी एक छोटी सी निजी कहानी बताना चाहता हूँ। मैंने फिलाडेल्फिया में हाई स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की है, इसलिए मैं भाईचारे के प्यार के शहर को अच्छी तरह से जानता हूँ। मेरे हाई स्कूल का नाम जर्मनटाउन हाई स्कूल था।

मुझे नहीं पता कि आपने कभी जर्मनटाउन हाई स्कूल के बारे में सुना है या नहीं, लेकिन फिलाडेल्फिया के एक हिस्से जर्मनटाउन को जर्मनटाउन कहा जाने लगा क्योंकि यहाँ बहुत सारे जर्मन आप्रवासी आ रहे थे, इसलिए मैं जर्मनटाउन हाई स्कूल गया। यह यहाँ का एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्तिगत इतिहास है। मैं वास्तव में यहाँ जो कुछ भी हो रहा है उससे जुड़ सकता हूँ।

यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वास्तव में एक अलग समूह है। इसमें बहुत से अलग-अलग जर्मन संप्रदाय शामिल हुए। लूथरनवाद सबसे बड़ा था।

मेरे पसंदीदा में से एक डंकर्स नामक एक जर्मन संप्रदाय था। उन्हें डंकर्स इसलिए कहा जाता था क्योंकि वे बपतिस्मा लेते थे; वे वास्तव में बपतिस्मा में विश्वास करते थे, जो आपको उनके अधीन रखता है। बहुत सारे जर्मन संप्रदाय हैं।

हालांकि, यहाँ दिलचस्प बात यह है कि अमेरिका में, उपनिवेशों में सुधार की एक नई शाखा ने अपनी पकड़ बनानी शुरू कर दी है, क्योंकि अब तक, हमने जो देखा है वह है कैल्विनिस्ट प्रभाव, सुधार प्रभाव उपनिवेशों में आ रहा है, प्यूरिटन के माध्यम से, निश्चित रूप से कई बैपटिस्टों के माध्यम से। हम अब इन जर्मन प्रवासियों, विशेष रूप से लूथरन के साथ एक बिल्कुल अलग माहौल, एक बिल्कुल अलग समूह, एक बिल्कुल अलग सुधारवादी सोच वाला समूह देख रहे हैं। इसलिए, वे कैल्विनिस्ट नहीं हैं।

वे लूथरन हैं, या वे अन्य जर्मन संप्रदायों से हैं। तो यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। ठीक है, अब, क्योंकि वहाँ बहुत अधिक धार्मिक स्वतंत्रता और स्वतंत्रता थी, और क्योंकि फिलाडेल्फिया वास्तव में एक अच्छी तरह से स्थापित शहर था, वहाँ दो समूह थे जिन्हें वास्तव में खुद को संप्रदाय के रूप में स्थापित करने, वास्तव में अपनी जड़ों को संप्रदाय के रूप में स्थापित करने की स्वतंत्रता मिली।

तो मैं दो समूहों का जिक्र करना चाहूँगा। सबसे पहले, बैपटिस्ट थे। फिलाडेल्फिया में बैपटिस्टों के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख है।

यह 1707 है। 1707 में जो हुआ वह यह था कि 1707 में बैपटिस्ट एसोसिएशन का पहला गठन हुआ था। और उन्हें लगता है कि वे फिलाडेल्फिया में ऐसा कर सकते हैं क्योंकि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर है, जाहिर है कि जब आप क्रांति के बारे में सोचते हैं तो यह एक महत्वपूर्ण शहर बन जाता है।

तो, यह इतना महत्वपूर्ण शहर है, और यह एक ऐसा शहर भी है जो धार्मिक स्वतंत्रता की अनुमति देता है। ठीक है, अब मुझे इसे पावरपॉइंट पर रखना चाहिए था, लेकिन मेरे पास इसके लिए पावरपॉइंट नहीं है। आप में से जो लोग बैपटिस्ट हैं, वे इसे जानते होंगे? हालाँकि, बैपटिस्ट के लिए, बैपटिस्ट चर्च के लिए अधिकार का केंद्रीय स्थान क्या है? यह स्पष्ट रूप से पोप नहीं है।

यह स्पष्ट रूप से कोई आर्कबिशप, या कोई बिशप, या कार्डिनल या ऐसा कुछ नहीं है। आप क्या कहेंगे कि बैपटिस्ट चर्च के लिए बैपटिस्ट धर्मशास्त्र के अधिकार का स्थान क्या है? कौन नियुक्त करता है? बैपटिस्ट चर्च या बैपटिस्ट समुदाय में नियुक्त करने का अधिकार किसके पास है? मण्डली। मण्डली अधिकार का केंद्र है।

वह मण्डली पवित्र है। कोई भी उस मण्डली को यह नहीं बता सकता कि उसे क्या करना है, यहाँ तक कि अन्य बैपटिस्ट भी नहीं। इसलिए, बैपटिस्ट, मैं आपको बैपटिस्ट कहने जा रहा था, लेकिन बैपटिस्ट और गॉर्डन कॉलेज की स्थापना एक बैपटिस्ट संस्थान के रूप में की गई थी, इसलिए हम इसे अपने इतिहास से जानते हैं।

लेकिन अधिकार का केंद्र स्थानीय मण्डली है। इसलिए, यह बहुत स्वायत्त हो जाता है। स्थानीय मण्डली बहुत महत्वपूर्ण और स्वायत्त हो जाती है।

यहाँ अधिकार का केंद्र है। हालाँकि, 1707 तक, आपके पास ये बैपटिस्ट समूह, यहाँ तक कि अलग-अलग संप्रदाय, चर्च, और इसी तरह के अन्य समूह हैं, और वे सभी स्वायत्त हैं। 1707 तक, बैपटिस्टों ने यह समझना शुरू कर दिया, आप जानते हैं, यह अच्छा होगा यदि हम खुद को संगठित कर सकें, यदि हमारे पास एक तरह का संघ हो।

कोई भी उन बैपटिस्टों को यह नहीं बताएगा कि उन्हें क्या करना है, लेकिन उन व्यक्तिगत बैपटिस्ट चर्चों को, मुझे लगा कि कुछ बैपटिस्ट मुझसे यहाँ बात कर रहे हैं, लेकिन कोई भी उन बैपटिस्ट चर्चों को यह नहीं बताएगा कि उन्हें क्या करना है। लेकिन बैपटिस्टों ने यह समझना शुरू कर दिया कि अगर हम एसोसिएशन बनाते हैं ताकि हम एक-दूसरे का समर्थन कर सकें और एक-दूसरे के साथ महत्वपूर्ण चीजों पर चर्चा कर सकें, तो इससे मदद मिलेगी। ऐसा नहीं है कि वह एसोसिएशन आपको कुछ करने के लिए मजबूर करेगी, आप स्थानीय बैपटिस्ट चर्च।

तो, अमेरिका में पहला बैपटिस्ट एसोसिएशन 1707 में फिलाडेल्फिया में बना था। अब, हम देखेंगे कि जब हम बैपटिस्ट इतिहास के बारे में और बात करेंगे, लेकिन यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख है, और यह वहाँ होने वाली एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है। दूसरा समूह जिसने फिलाडेल्फिया को वास्तव में महत्वपूर्ण पाया, वह लोगों का एक समूह था जो खुद को प्रेस्बिटेरियन कहने लगा था।

प्रेस्बिटेरियन, आप में से कुछ लोग प्रेस्बिटेरियन पृष्ठभूमि से आते होंगे। 1706 में, फिलाडेल्फिया में पहली प्रेस्बिटेरी की स्थापना की गई थी। इसलिए, यदि आप प्रेस्बिटेरियन हैं, तो आपको पता होगा कि प्रेस्बिटेरियन चर्च का अधिकार केवल स्थानीय मण्डली में ही नहीं है, बल्कि यह आम लोगों और पादरियों का एक संघ है जो प्रेस्बिटेरियन प्रकार के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक साथ आते हैं।

ये प्रेस्बिटेरियन, 1706 प्रेस्बिटेरियन, बहुत कैल्विनिस्ट लोग होंगे। वे कैल्विनिस्ट धर्मशास्त्र में निहित लोग होंगे। और इसलिए, 1706 में, अमेरिका में पहली प्रेस्बिटेरी फिलाडेल्फिया में बनाई गई थी।

तो यह बहुत महत्वपूर्ण है। अब, मैं इस तरह के सारांश को यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए एक उद्धरण देने जा रहा हूँ। यहाँ उद्धरण है: इसलिए, किसी अन्य उपनिवेश ने पेंसिल्वेनिया की तरह धार्मिक निकायों की इतनी विविधता प्रस्तुत नहीं की है।

तो यही वह बात है जिसके लिए पेंसिल्वेनिया जाना जाता है। पेंसिल्वेनिया अपनी विविधता के लिए जाना जाता है। पेंसिल्वेनिया के लिए जाना जाता है, यहाँ बहुत सारे समूह हैं, और यहाँ जर्मन लूथरन हैं, और यहाँ सभी प्रकार के बैपटिस्ट हैं, और यहाँ प्रेस्बिटेरियन हैं, और हमारे पास एंग्लिकन हैं और इसी तरह के अन्य लोग हैं।

तो यह 18वीं सदी की शुरुआत में पेंसिल्वेनिया की पहचान बन गई। तो, विलियम पेन और पेंसिल्वेनिया। मैं बस लॉर्ड बाल्टीमोर का ज़िक्र करना चाहता हूँ, और फिर मैं आपको अपनी बात कहने का मौका देता हूँ।

तो, चलिए ई, लॉर्ड बाल्टीमोर और मैरीलैंड पर चलते हैं। तो, चलिए लॉर्ड बाल्टीमोर के बारे में बात करते हैं इससे पहले कि मैं आपको यहाँ विराम दूँ। ठीक है।

यहाँ वह है। जॉर्ज कैल्वर्ट उसका दिया हुआ नाम है, और लॉर्ड बाल्टीमोर वह नाम है जो वह तब लेता है जब वह कहीं विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति बन जाता है। ठीक है।

जॉर्ज कैल्वर्ट के बारे में संक्षेप में कहानी। वह भी एंग्लिकन थे। जॉर्ज कैल्वर्ट एंग्लिकन थे और उन्होंने एंग्लिकन के रूप में अपनी उपाधि प्राप्त की, लेकिन वह दूसरे समूह की ओर आकर्षित होने लगे।

वह इंग्लैंड में रोमन कैथोलिकों की ओर आकर्षित होने लगे। यह कोई आसान बात नहीं थी क्योंकि रोमन कैथोलिकों को भी सताया जाता था, लेकिन वह उनकी ओर आकर्षित होने लगे और विलियम पेन के क्रेकर बनने की तरह बाल्टीमोर भी रोमन कैथोलिक बन गए। इसलिए, उन्होंने रोमन कैथोलिक पक्ष लिया और अब उन्हें विलियम पेन से पहले चार्टर प्राप्त हुआ।

उन्हें 1632 में एक चार्टर मिला, ठीक उसी समय जब उनकी मृत्यु होने वाली थी। उन्हें एक चार्टर मिला, और उन्होंने फैसला किया कि वे धार्मिक सहिष्णुता और धार्मिक स्वतंत्रता के तत्वावधान में नई दुनिया में एक जगह स्थापित करना चाहते हैं। इसी से हम मैरीलैंड पहुंचे और मैरीलैंड की स्थापना हुई।

ठीक है। पहला समूह, ओह मुझे बस इतना कहना है, और मैं वादा करता हूँ कि मैं आपको अपनी छुट्टी दूंगा, लेकिन इस कॉलोनी में आने वाले लोगों का पहला जहाज़ लोड वे रानी मैरी के नाम पर रखने जा रहे हैं, पहला जहाज़ लोड 1634 में आता है, इसलिए उनकी मृत्यु के बाद। अब, उस जहाज़ पर, बहुत सारे रोमन कैथोलिक थे क्योंकि इस कॉलोनी को धार्मिक स्वतंत्रता के स्थान के रूप में स्थापित किया गया था, धार्मिक स्वतंत्रता का स्थान।

रोमन कैथोलिक जानते होंगे कि वे उस बैनर के तहत नई दुनिया में जा सकते हैं। जिस बात पर हम ध्यान देना चाहते हैं वह यह है कि रोमन, रोमन, वहाँ बहुत सारे रोमन कैथोलिक थे, लेकिन वे बहुसंख्यक नहीं थे। इसलिए, वे नहीं गए; उस जहाज़ पर बहुसंख्यक लोग नहीं थे।

उस जहाज़ पर ज़्यादातर लोग एंग्लिकन थे। इसलिए, जबकि इस नई कॉलोनी में बहुत सारे रोमन कैथोलिक आ रहे थे, फिर भी एंग्लिकन बहुसंख्यक थे। इसलिए यह होने जा रहा है, मैरीलैंड एक ऐसी जगह होगी जहाँ कैथोलिक चर्च का स्वागत किया जाएगा; मैरीलैंड में रोमन कैथोलिकों का स्वागत किया जाएगा, लेकिन यह रोमन कैथोलिकों द्वारा नियंत्रित नहीं होने जा रहा है।

यह एंग्लिकन द्वारा नियंत्रित होने जा रहा है। ठीक है। सोमवार को पाँच सेकंड का एक छोटा ब्रेक लें।

क्या किसी को उपस्थिति पत्रक की आवश्यकता है? जब आप... मैरीलैंड नामक इस जगह पर क्या होता है? ठीक है। जो हुआ वह यह है कि थॉमस ब्रे नामक एक व्यक्ति के माध्यम से, चर्च ऑफ इंग्लैंड, एंग्लिकन चर्च की स्थापना की गई जिसे हम मैरीलैंड का राज्य चर्च कह सकते हैं।

तो, चर्च ऑफ इंग्लैंड की स्थापना रोमन कैथोलिक चर्च के रूप में नहीं की गई है। बेशक, उनमें से बहुत से थे, लेकिन वे बहुमत में नहीं थे। इसलिए वे एंग्लिकन चर्च द्वारा स्थापित किए गए हैं, जो कि कानून द्वारा स्थापित चर्च है।

तो, ठीक है। अब, थॉमस ब्रे। इस आदमी, थॉमस ब्रे के बारे में क्या? दरअसल, यह कॉलोनी लंदन के बिशप के तत्वावधान में, नियंत्रण में थी, जैसा कि अन्य कॉलोनियाँ थीं।

तो, लंदन के बिशप ने मैरीलैंड और इस नई दुनिया के इस हिस्से की देखरेख की। अब, लेकिन लंदन और नई दुनिया के बीच एक लंबी दूरी है। और इसलिए इस चीज़ को चलाने के लिए किसी को साइट पर होना चाहिए।

और जिस व्यक्ति को इसके लिए चुना गया था, वह थॉमस ब्रे था। इसलिए, उसे लंदन के बिशप ने ओवरसियर के रूप में नियुक्त किया। उन दिनों जो शब्द इस्तेमाल किया जाता था, वह था कमिसरी।

थॉमस ब्रे मैरीलैंड कॉलोनी के कमिश्नर या पर्यवेक्षक थे। ठीक है। अब, थॉमस ब्रे को उनके द्वारा स्थापित दो समाजों के लिए जाना जाता है।

तो, मैं उन दो सोसाइटियों का ज़िक्र करना चाहूँगा जो आज भी काम कर रही हैं। एंग्लिकन चर्च द्वारा स्थापित, थॉमस ब्रे द्वारा स्थापित। पहली सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ़ क्रिश्चियन नॉलेज, SPCK थी।

इसलिए, अगर आप कभी किसी पाठ्यपुस्तक या किसी भी चीज़ में SPCK के शुरुआती अक्षर देखते हैं, तो आपको पता चल जाएगा कि यह क्या है। ईसाई ज्ञान के प्रचार के लिए सोसायटी। थॉमस ब्रे के लिए, यह महत्वपूर्ण था कि नई दुनिया में पुस्तकालयों का निर्माण किया जाए ताकि लोगों के पास, आज की तरह विशाल पुस्तकालय न हों, लेकिन किताबें उपलब्ध हों, नई दुनिया में पुस्तकालयों का निर्माण किया जाए जो एंग्लिकन चर्चों और अन्य से जुड़े हो सकें, लेकिन ताकि लोग ईसाई धर्म को समझ सकें।

तो, यह एक तरह का शैक्षणिक उद्यम था। इसलिए, उन्होंने उस उद्यम की स्थापना की, जिसने न केवल ईसाई ज्ञान को आगे बढ़ाया, बल्कि ईसाई धर्म की एंग्लिकन समझ को भी आगे बढ़ाया। ठीक है।

दूसरा समूह जिसकी उन्होंने स्थापना की वह था सोसाइटी फॉर द प्रोपेगेशन ऑफ़ द गॉस्पेल इन फॉरेन पार्ट्स, एस.पी.जी. यह एक मिशनरी प्रयास है।

तो, यह उन लोगों के बीच किसी भी मिशनरी कार्य का समर्थन करने के लिए है जिन्हें हम आज मूल अमेरिकी कहते हैं, उन लोगों के बीच जो एक तरह से बुतपरस्त हैं, जो किसी भी संप्रदाय से संबंधित नहीं हैं। तो, विदेशी भागों में सुसमाचार के प्रचार के लिए सोसायटी। तो थॉमस ब्रे ने मैरीलैंड नामक इस जगह में आधिकारिक चर्च के रूप में एंग्लिकन चर्च को स्थापित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अब, क्या इसका मतलब यह था कि मैरीलैंड असहिष्णु था? क्या इसका मतलब यह था कि यह अन्य लोगों के आने के प्रति उदासीन था? और इसका उत्तर है नहीं। अन्य समूह सहज महसूस करते थे। अब, वास्तव में वोट देने या चुने जाने के लिए आपको एंग्लिकन होना पड़ता था, और इसी तरह, लेकिन क्या इसका मतलब यह था कि अन्य समूह नहीं आ सकते थे? इसका उत्तर है नहीं।

अन्य समूहों को मैरीलैंड आने में सहजता महसूस हुई। इसलिए भले ही यह एक तरह से एंग्लिकन चर्च द्वारा चलाया जाता था, लेकिन यह खुला था। ठीक है।

अब, हमें वर्जीनिया का ज़िक्र करना चाहिए। ठीक है। तो यह आपकी सूची में अगला नाम है, वर्जीनिया, नंबर F। ठीक है।

अब, वर्जीनिया। याद रखें, वर्जीनिया की तारीख 1607 है, और जिस शहर की स्थापना की गई थी उसका नाम जेम्सटाउन था। अब, हमने पहले व्याख्यान में इसके बारे में बात की थी।

तो वर्जीनिया की स्थापना 1607 में राजा जेम्स के नाम पर जेम्सटाउन, वर्जीनिया के रूप में की गई थी। मुझे बस एक मिनट के लिए वापस जाना है। लेकिन वह कॉलोनी, मुझे नहीं पता, थोड़ी गायब हो जाती है, और वहाँ सभी तरह की चीजें होती हैं।

लेकिन यह तो बस शुरुआत है। लेकिन, जब आप 1620 और 1630 के दशक में पहुंचते हैं, तो वर्जीनिया में ऐसे लोग हैं जो मूल रूप से एंग्लिकन हैं।

अब, वर्जीनिया में एक विशेष रूप से अनूठी समस्या थी जो किसी अन्य उपनिवेश में दोहराई नहीं गई थी। वर्जीनिया एक विशाल भूमि का टुकड़ा था, और जो एंग्लिकन यहाँ आ रहे थे, वे यहाँ रह रहे थे, यह न्यू इंग्लैंड जैसा नहीं था जहाँ आपके पास, मुझे नहीं पता, पोर्टलैंड और पोर्ट्समाउथ और इप्सविच और सलेम और बोस्टन और प्रोविडेंस थे। आपके पास ये शहर और कस्बे थे जो लगभग एक दूसरे से जुड़े हुए थे और इसी तरह।

तो, यह न्यू इंग्लैंड जैसा नहीं था, जहाँ हर कोई एक दूसरे के बहुत करीब रहता था। वर्जीनिया में हर कोई पूरी तरह से बिखरा हुआ रहता था। तो, ये एंग्लिकन वर्जीनिया में क्या करने जा रहे हैं? वे केवल यही कर सकते हैं कि क्योंकि उनके पास इन एंग्लिकनों की सेवा करने के लिए पुजारी नहीं हैं, इसलिए वे एंग्लिकन चर्च की स्थापना नहीं कर सकते और चर्च वगैरह नहीं बना सकते।

वे जो करने जा रहे हैं वह एंग्लिकन समुदायों को ले वेस्टरीज़ के ज़रिए चलाना है। इसलिए, लेमेन, ले लोग, जिन्हें वेस्टरीज़ कहा जाता है, इन बिखरे हुए पैरिशों पर नियंत्रण करने जा रहे हैं। और वे बहुत व्यापक थे।

अब, यह एक समस्या बन गई है। और समस्या यह थी कि, वर्जीनिया मैरीलैंड की तरह था। यह लंदन के बिशप के नियंत्रण में था।

लेकिन यहाँ लंदन है, और यहाँ वर्जीनिया है, और वहाँ पहुँचने के लिए 10, 12, 15 हफ़्ते की नाव यात्रा है, जहाज़ पर, और इसी तरह। तो, वर्जीनिया में कौन सी समस्या विकसित हुई जो औपनिवेशिक काल या आरंभिक औपनिवेशिक काल में अनोखी थी? इन ले वेस्टरीज़ को अपनी सत्ता पसंद आने लगी। उन्हें यह पसंद आया।

और उन्होंने चर्च को आम लोगों की तरह नियंत्रित करना शुरू कर दिया या पारिशों को आम लोगों की तरह नियंत्रित करना शुरू कर दिया। उन्होंने इन पारिशों पर बहुत कड़ा नियंत्रण रखना शुरू कर दिया। और यह एंग्लिकन तरीका नहीं है।

एंग्लिकन तरीका एक पदानुक्रमिक तरीका है। कैंटरबरी के आर्कबिशप, आपके पास आपके बिशप, आपके पुजारी, आपके आम लोग, और इसी तरह के अन्य लोग हैं। इसलिए यह बहुत समस्याग्रस्त हो गया।

इन आम लोगों के नियंत्रण से बाहर हो जाएँगे जो वर्जीनिया में एंग्लिकन चर्च के पूरे शो को चला रहे हैं। और अरे, हम क्या करने जा रहे हैं? तो, लंदन के बिशप ने एक ऐसे व्यक्ति को भेजा जो अमेरिकी चर्च के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण बन गया, और उस व्यक्ति का नाम जेम्स ब्लेयर था। तो जेम्स ब्लेयर वर्जीनिया आए, और वे 1685, 56, 66, 76 में पहुँचे, वे 1685 में आने पर 29 वर्ष के थे।

और वह अपनी मृत्यु तक यहीं रहता है। इसलिए, वह वह व्यक्ति बन जाता है जो वर्जीनिया में एंग्लिकन चर्च को नियंत्रित करता है। वह इन ले वेस्टरी को लाता है और उनसे निपटता है, इन पैरिशों में काम शुरू करने के लिए इंग्लैंड से पादरी लाता है, और इसी तरह।

तो, वह वह व्यक्ति है जिसे वर्जीनिया में एंग्लिकन चर्च का नक्शा बनाने के लिए भेजा गया था, कि यह कैसा दिखना चाहिए, यह कैसा होना चाहिए, इत्यादि। तो उसने एक तरह से वर्जीनिया को इन ले वेस्टरी द्वारा पूरी तरह से नियंत्रित होने से बचाया। अब, एक चीज जो उसने की, जिसका मैं सिर्फ उल्लेख करना चाहता हूँ, वह यह है कि वह इसके लिए जाना जाता है, और वह यह है कि उसने 1693 में एक कॉलेज की स्थापना की।

यह मूल रूप से एंग्लिकन के लिए था, लेकिन इसने 1693 में एक कॉलेज की स्थापना की। और मुझे नहीं पता कि आप विलियम्सबर्ग, वर्जीनिया गए हैं या नहीं। क्या यह एक खूबसूरत जगह नहीं है? विलियम्सबर्ग, वर्जीनिया। अगर आपको कभी मौका मिले, तो यह आपको 18वीं सदी के वर्जीनिया में वापस ले जाएगा, आप जानते हैं, औपनिवेशिक काल।

खैर, कॉलेज की स्थापना 1693 में हुई थी, इसे विलियम और मैरी कहा जाता था। यह स्पष्ट रूप से स्थापित किया गया था; इसकी स्थापना एंग्लिकन पादरियों को प्रशिक्षित करने के लिए नहीं की गई थी, बल्कि इसकी स्थापना एंग्लिकन चर्च द्वारा की गई थी। अब इन कॉलेजों की स्थापना, हमने 1636 में हार्वर्ड का उल्लेख किया, और हमने ब्राउन का उल्लेख किया, अब ब्राउन थोड़ा बाद में हुआ, लेकिन विलियम और मैरी 1693 में थे।

और आपने इन कॉलेजों का उल्लेख किया, और मुझे लगता है कि आज आप इन कॉलेजों की कल्पना करते हैं, इसलिए आप आज हार्वर्ड विश्वविद्यालय या विलियम और मैरी की कल्पना करते हैं। आपने शायद उस कॉलेज को देखा होगा जब आप आज वहां थे। दरअसल, विलियम और मैरी में काफी सालों तक, 20 से ज़्यादा छात्र नहीं थे। दूसरे शब्दों में, इस कमरे में पहले कुछ सालों में विलियम और मैरी कॉलेज में जितने छात्र थे, उससे ज़्यादा लोग हैं।

तो, उनके पास एक इमारत थी, और वह जगह थी, और वह शिक्षक थे और इसी तरह की अन्य बातें। इसलिए, आपको इन जगहों की कल्पना उस तरह से नहीं करनी चाहिए, जैसी हम आज करते हैं। लेकिन यह वर्जीनिया में एक बहुत ही बढ़िया विश्वविद्यालय की शुरुआत थी।

तो, वर्जीनिया। अब, आइए जी के निष्कर्षों पर आते हैं। मैं इन निष्कर्षों के साथ दो काम करने जा रहा हूँ।

पहली बात जो मैं करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं उपनिवेश काल की शुरुआत से लेकर पूरे उपनिवेशों में अमेरिका में धार्मिक जीवन की स्थिति को देखना चाहता हूँ। दूसरी बात जो मैं करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं हर संप्रदाय को लेकर वापस जाऊँ और हमें याद दिलाऊँ कि वे कहाँ थे। मैं उस दूसरे भाग पर नहीं जाऊँगा, और मैं आज पहली बात भी नहीं बताऊँगा।

तो, सबसे पहले, निष्कर्ष। औपनिवेशिक काल तक धार्मिक जीवन की स्थिति क्या थी? उस समय तक अमेरिका में धार्मिक जीवन कैसा दिखता था? ठीक है, तो यहाँ बहुत सारी चीज़ें हो रही हैं। ठीक है, पहली बात जिससे हम हैरान नहीं हैं, वह यह है कि जब आप औपनिवेशिक काल तक पहुँचते हैं, तो पूरे उपनिवेशों में धार्मिक विविधता होती है।

इसलिए, हम इस बारे में आश्चर्यचकित नहीं हैं। हमने इन सभी धार्मिक समूहों को आते और बसते हुए देखा है। इसलिए, पूरे उपनिवेशों में बहुत सारी धार्मिक विविधता है, और बहुत सारी धार्मिक संस्थाएँ हैं।

इन निकायों में कुछ वृद्धि हुई है। तो यह पहली चीज़ है जो हम देखते हैं, धार्मिक विविधता, विभिन्न धार्मिक निकाय, विभिन्न धार्मिक संप्रदाय। ठीक है, तो यह नंबर एक है।

दूसरा, हम इस पर ध्यान देना चाहते हैं क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है। औपनिवेशिक काल में कोई भी एक प्रमुख संप्रदाय नहीं था। औपनिवेशिक काल में कोई भी एक प्रमुख संप्रदाय नहीं था, जिसका अर्थ है कि औपनिवेशिक काल में, उपनिवेशों में, आपके पास कभी भी वह नहीं होगा जो आपके पास यूरोप में था, जहाँ एक संप्रदाय प्रमुख है, और वह एक तरह का राजकीय धर्म बन जाता है।

ऐसा कभी नहीं होगा, पूरे उपनिवेशों में नहीं। अब आप जानते हैं, मैसाचुसेट्स मण्डली है, वर्जीनिया एंग्लिकन है। मेरा मतलब है, आपके पास उस तरह की अभिव्यक्ति हो सकती है, लेकिन आपके पास ऐसा नहीं होगा जो सभी उपनिवेशों में प्रमुख हो।

हम यूरोप में कुछ जगहों पर जो हो रहा था, उसके अधीन नहीं होने जा रहे हैं। तो यह नंबर दो है। ठीक है, नंबर तीन यह है कि जिन चर्चों के बारे में हमने यहाँ बात की है, वे मूल रूप से प्रत्यारोपित चर्च हैं।

हमने जिन संप्रदायों के बारे में बात की है, वे मुख्य रूप से यूरोप से आते हैं। वे यहाँ अमेरिकी जीवन में प्रत्यारोपित किए गए हैं। जहाँ तक मुझे याद है, हमने अभी तक वास्तव में ऐसा कोई संप्रदाय नहीं देखा है जो वास्तव में अमेरिकी धरती पर शुरू हुआ हो।

तो, हम अभी भी अप्रवासी चर्चों के बारे में बात कर रहे हैं। हम अभी भी यहाँ प्रत्यारोपित चर्चों और प्रत्यारोपित संप्रदायों के बारे में बात कर रहे हैं। तो, क्या यहाँ कोई ऐसा है जो मुझे याद नहीं आ रहा है? कांग्रेसनलिस्ट प्रत्यारोपित थे क्योंकि वे प्यूरिटन थे, और फिर वे तीर्थयात्री थे, और फिर अब उन्होंने यहाँ कांग्रेसनलिज़्म का गठन किया, लेकिन वे अभी भी एक तरह से प्रत्यारोपित थे।

तो, यह अमेरिकी धार्मिक जीवन को निर्धारित करने जा रहा है। और फिर हम जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि अमेरिकी धरती पर नए समूह बनने शुरू हो रहे हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

ठीक है, अब जब इन समूहों को प्रत्यारोपित कर दिया गया है, तो मण्डलीवाद इसका एक आदर्श उदाहरण है। ये सैनिक जो प्रत्यारोपित किए गए हैं, ये समूह जो यहाँ आते हैं, उनके पास यूरोप में जो प्रतिबंध थे, वे नहीं हैं। इसलिए, वे यहाँ एक वास्तविक स्वतंत्रता, एक वास्तविक स्वतंत्रता पाते हैं जिसका अनुभव उन्होंने यूरोप में अपने चर्च जीवन में नहीं किया था।

यह इस तरह के अप्रवासी संप्रदायों के लिए बहुत ही मुक्तिदायक हो जाता है। इसलिए, हमें इस पर ध्यान देना चाहिए। ठीक है, एक और बात जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए वह यह है कि इस तरह के बहुत से स्थापित चर्च जब यहाँ आए, तो वे पहली या दूसरी पीढ़ी के लिए ठीक थे।

वहाँ एक ताकत थी; दूसरी पीढ़ी के लिए एक तरह का पोषण था। लेकिन इनमें से बहुत से संप्रदाय जो यहाँ आए, वे खुद को गिरावट में पाते गए। उन्हें लगने लगा कि वे अपने चर्चों या अपने संप्रदायों में सदस्यता नहीं रख पा रहे हैं।

और उन्होंने पाया कि लोग उनके चर्च में शामिल नहीं हो रहे थे। यह इन समूहों के लिए बहुत समस्याजनक हो गया। और सवाल यह है कि आप इससे कैसे निपटते हैं? अब, एंग्लिकन चर्च, डच रिफॉर्म चर्च और कांग्रेसनल चर्च के प्रति निष्ठा में गिरावट के कई कारण हैं।

इसके कई कारण हैं। ठीक है, हम बुधवार को इस पर चर्चा करेंगे। और कोई मुझे याद दिलाए कि हमने यहाँ कहाँ छोड़ा था।

और बुधवार को हम इसे फिर से शुरू करेंगे। आपका दिन शुभ हो।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 4 है, अमेरिकी उपनिवेशों में संप्रदायवाद।